

शिष्यापठितं अर्थयेत् ॥ कारुण्यनिन ये देवि सर्वसन्निधि संश्रये ॥ शारदा
 वत्सलो मातुः कृपा मस्ति नृणां लोकतः ॥ १ ॥ पुं देवते तु ॥ कारुण्यश्रय
 दत्तं सर्वदा ॥ २ ॥ अमुकदेवता मंत्रमहं ददामीति दद्यात् ॥ दीक्षणाकर्तृ
 श्रावणं मंत्रं श्रावयेत् ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यन्मृत
 नापि संकृतं ॥ तत्सर्वं पूर्णं मे वास्तु सुधी सोमवत्सर्वदा ॥ १ ॥

आशा कारुण्य

2637

ASIA ARCHIVES

ॐ
ॐ

श्रीवडासुतायनमः॥ ॥अथकितनविधिः॥यथाविधिधंस्थापनयाया।सूर्य
र्य॥पंरगये।अधन॥प्रकारधिय॥संवाक्यमातका॥तासु।अधन॥गीतारिगुम
उता॥कायतपूजा॥आरितमयारहस्य॥गीतारिदगुनित्रिसमाधि॥गीतादिकलमपू
।रुमिअधन॥प्रंरसुकाजादंकाप॥त्रिसमाधिधका॥मंडलरुमधेनिषयपनिफ
पूष्यघटिकादिरिगुका।।वगुका।नधूपघटिकादिरिगुनृगुगीतादिरिगु
॥॥ॐ॥निरुमिअधनी॥॥धनैतिमंडलम॥अमृदलम॥अमृदलम॥कीलन
थपद॥मृवनिनिगीतह॥॥ध्यानं॥मनःशातनृथायति॥जा॥धू॥नि॥म॥ता॥त्रि॥
मं॥रुनृवतहाय॥मं॥वामुनतलान॥पनकानस्यपनयाय॥रुकाशाय॥पं॥रुउतवाहि
मं॥नक॥यंदमनलपनं॥हिंदूनततिरक॥पं॥वापयानपूजा॥वाक्यपूजा॥॥
ॐ॥निकितनपूजाविधिः॥धनैति॥कितनदव॥तापं॥धकासिनहनकीतयवा
चुनापं॥

मं॥रु
मनीन
कलमरु
वडमय

पुनरापूजा

क॥ॐ॥कै॥हिं॥॥धयासिडा॥गुनकमापन॥वडयं॥ॐ॥नाडा॥पनिक्रम॥प्र
रुकि॥म॥मंडल॥रुविय॥सपूर्वतिन॥धनननरुविय॥॥गीतपूर्वज्ञान॥नृगु
याय॥थकासिनदव॥पक॥मंत्रोयं॥उं॥यमांतकृदिति॥पूर्व॥द॥प॥उ॥धू॥मा॥
नेवाय॥उं॥धू॥॥दहदिहगीतनृगु॥॥धनप्रकादितगीतनृगु॥तासा
मा॥ता॥दो॥॥न॥न॥वाक्यपूजा॥नि॥दमकुअनांवलि॥उं॥ग्रा॥रु॥हा॥यमांतक
प्रहांतकृति॥॥पं॥वापयान॥॥ॐ॥निकितनविधिः॥॥ततावसुधना
धिरासत॥धी॥न॥वातननपम॥याय॥अमृदलम॥॥ध्यान॥वंहववसु
धनावि॥रा॥वे॥ति॥॥॥जा॥धू॥नि॥म॥ता॥त्रि॥या॥पू॥पं॥वापयानपूजा॥॥
॥॥धननृववाका॥उं॥रुहिमहादवीति॥ता॥प्र॥वा॥ध॥॥धनव

भरुनिनि
पूर्वज्ञान॥
प्रकादित
वंहववसु

ॐ

कबंध॥भदिनीवकीति॥वाकपूजा॥वसुधनावति॥पंचोप॥ ॥ॐतिवसु
धनाधिवासन॥ ॥तत्तकलगाधिवासन॥मंडलमधसपीतगोसुवने
सुदलगापाडाधनकीदधसकलगतम॥कडाभसुउकडासवऊ
लिडानगीवतडासदी०।धननीलनंगभ्रुगुक्रनंगनेअधुपीत०।व
मूयनक००ीमनममनंग॥ ॥धनगीतनिर्माभंवडे॥सूत्रपत्रय॥मंडल
रुमधनिर्गत्यपूर्वहिप्वा०मंडलाधिपतिपागवानुशदिनऊसानिदि
तासदलकऊलकर्मिकायांविऊयकलर्गसार्वकर्त्रिककलर्गवास्थापय
रुस्थापनि॥ ॥धनऊपा॥गीवसंतव॥ध्यान॥उंभ्राःहंसफऊप्रहृति॥
मधुनिमताभ्रापापुपंचोलाघंसुति॥ ॥पुनगमथा॥पंपूलाघंसु

निर्माभंव
नंगमधिवा

ॐ

वाकपूजा॥भ्रुकानामुवति॥वसि॥ ॥ॐतिकलगाधिवासनः॥ ॥तत्ता
सूजाधिवासनविधिः॥ ॥वजनधिय॥वाकंउंऊंऊंहीनत्रा०००दि॥
सुसमंत्रेणभ्रुकायादि॥सूउंभ्रामस्य॥ऊपायः॥पंचवडहावना॥भ्रवहाव
ना॥०००हावना॥ ॥नीगमधिवासन॥पंलांघंसु॥दडाभ्रयादनी
गसवऊनधिय॥उंई०००॥नीलनंगस्यबीजधन॥भ्रुगुक्रनंग॥वऊ
नधिय॥प्रवंनेमयवायुय००ीमनेमधनी॥ ॥वाकपूजा॥पंलाघंसुति॥
॥ॐतिनंगमधिवासनविधिः॥ ॥ऊमापनविसर्जनंगविलासय॥ ॥तत्ता
सूजाधिवासनविधिः॥ ॥पूर्ववहूपग्रंतिरवस्थापनं॥हावना॥ऊमापन॥
दडापनिक्रममडाभ्र॥नेर्कृष्णडा००ीमनडासूउनिक्रमंनिल॥ ॥धन

नय
नय

वऊधनप
वऊ

सुत्रपातन

सूत्रथययाविभन क्राय ॥ लावना ॥ बक्रसंगंधसबलाडासूत्रथयमंश ॥
ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ हवेदकिसाडा उल्लुनडा ॥ श्रीमानडा नेमूयडा ॥ श्रीगुयडा
वायव्यडा ॥ ॥ धनवकुलकाय ॥ गक्र ॥ ॐ श्रीविक्रवक्रति ॥ वेना वनादीनपंश
पदानयूजा लाघं सुति ॥ ॥ ॐ तिसूत्रपातविधि ॥ ॥ ततादवगाधिवान
विधिः ॥ ॥ शुभशुभनसुविष्काय ॥ लावना ॥ ततामंडलसमध्यनिषय पत्रिमा
स्य सर्वाधिपति मांडलसमस्यानानि ॥ दवतात्यासक्रमल संपदायुक्तसंगंधैर्वकु
लमीउल्लुका कृष्णमंडलस्य सहवीजमयूषां कृतं व कलम्भदिदवतामंडली
यथयोगम कृष्णमृ वेडमृ सूर्यमृ प्रवेण ॥ ॥ धनराभनस्तानकाय ॥ ॥
तता श्रीपाप रंदमनस्य पयित्वा वक्रसंवनयापूष्य मास ॥ मंडल ॥ ॐ तिसू

समनय
ववगाय

दवता ॥
मंडलकाय नक्रपातन

ॐ कामधियायवाक ॥ श्रीपाप पंश लाघं सु ॥ पूर्ववडा कपूजा ॥ सु थ
मक हलाहिः ॥ ॥ ॐ तिसूत्रपातविधिः ॥ ॥ धननारिकीलपूजा ॥ तानमंडल
ध्यानं ॥ ॥ धयालिका नारिकीलसिनाडा धयापालस पंश गंधपाप
लीतय ॥ धनपंशपातनपूजा ॥ धं चा सु ॥ ॥ गथा ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥
लावना कस्यकनावाभवजमृशित मंडल ॥ नंगनपातयत ॥ मंडप ० न मू
लसूत्रांतनलिविदुप्रविग्ध निष्कुमदाति ॥ ॥ ततालिवितमंडलसर्वा
कानसूटीरुत ॥ नक्रां उल्लुनानि विरुनस्याययदिति ॥ ॥ ॐ तिसूत्र
पातनविधिः ॥ ॥ दवपूजा कूसूनयाप ॥ ॥ धयालिकाधर्मदनक ॥ शु
भमंडल सकपालपूजा लांडलाठक पुनवीनपूजा ॥ महावसिष्ठिप ॥

तानमंडल

अभिवादन

[illegible]

वृद्धधर्मसंघद्विषमभननप्रयति०॥ ॥ गुरुवराव०॥ हवत्स॥ ॥ समवा
 हनेतुनिति॥ ॥ उत्सादयामिपत्रममिति॥ ॥ त्रिविधगीति॥ हत्वाथ
 क्रियति॥ अथाग्रनगृहीष्यामीति॥ आवाप्यंरगृहीष्यामीति॥ महानत्र
 कृतानति॥ महापद्मकलमुद्धति॥ पूजाकर्मेति॥ गृहीत्यासेवयति॥ अना
 स्तस्थानति॥ ध्वजयाताषादकीह्राय॥ ॥ ध्वजलिङ्गागुरुमैतृसविमर्श
 नपाय.नि.म.ता.पं.वगव्यविय॥ कलभलिषक.सुग्वननता.क.क.ता
 य.सिंहनकाय.ति.कायाधिष्ठानपाया॥ ॥ अतवेस्पा.उ.स.स्वान
 न.वृ.वकीरुय.ध.पा.लिङ्गा.धूं.म.ग.वा.ई.हू.जान.क.ना.ग्रा.मै.उ.स.स
 तय॥ ॥ ध्वजलि.गुरुनमिर्हपाक.मा.ग्रा.रुन.मि.सा.क.म.पा.क.नृग

लसवतनकृदहय॥दुदयगंधं दयात्॥ ॥धनडापथडावृत्तस्वस्तिकसुतया
 डाभावमगसुस्वन्मडापथनागया॥ ॥धनदंतकाष्ठकवियाडाहाथडापकी
 जानकी॥धनधियकंकातिनक॥धुंवडाहासहं॥तिप०नुपातयत्॥ ॥नासि
 क॥वाक्का॥ ॥गता॥मित्रापिमक॥ ॥धयासिडा॥मानक॥ ॥धयासिडा॥नक
 दृष्ट॥सापाकि॥दानाडास्वत्मा॥धनाडा॥सुगथिदिम॥स्वहिदिद्विय॥ ॥
 धनग्रीथिसवडनधिय॥वाल्काविय॥दंतकाष्ठविलाडातय॥ ॥धनडा
 जमानपनिधनहीतयाडा॥दणनाकन॥श्रमककलकादीरिति॥धनं
 उलदगनिमानान॥समकपापरुशडा॥उत्सन्नति॥श्रमयूष्माहिति॥स
 र्वपनिगृहीतास्य॥ति॥पुष्पमार्गवन्नति॥गधगतकलसडानिडा॥ ॥००॥ति

वाकिला

गिष्ठाडियासनविधिः॥ ॥धयासिडादीतहयपनि॥मलुलधिल्लकी
 लडान्यगीतगिष्ठा॥पानकूमलुलधल॥स्वाननायक॥गड॥विस्तर्न॥ध
 नगुत्स्यं॥धूपदान॥दवदवीस्वरूप॥न॥पूषान्यास॥हाथडापकीतथा॥ ॥
 धनगमनूदी०वाडा॥सर्प॥द्विय॥प्रदक्षिण॥उं॥विष्णुगुणगवनमहासु
 खमाकपूत॥सर्वसिद्धिसुखप्रदीपनमसुखारुम॥सिद्धिः॥कं॥वीहाप्रोसिद्ध
 ल॥प्रदक्षिण॥डागात्या॥अमाय॥स्वानच्छाया॥ ॥धनैसिदिगवूडा॥
 उरु॥हाननपूयक॥धनश्रावार्थप्रथमयात॥धूपआकर्षणदि॥पाद्या
 दि॥सास्यायं॥वा॥सु॥श्रीका॥ग॥ल॥द॥वि॥रु॥वा॥दि॥ति॥ ॥धनकूसकीकन॥
 नमस्कानमा०॥श्रुतनसविद्याय॥ ॥००॥या॥वार्थप्रथम॥ ॥धनसि

धनयाविधि

श्रीगुरुदेव

दिग्गुप्त
वडाग्रम

नमस्तान

ॐ

धुमाहमि साधन ॥ शुभं संतु लद गुहिका पतिना कन धूः श्रु पा यः पं पू
ला धं स्त ॥ तर्प्य द-कृमा पन विसर्जन श्रागन तर्प्य धर्ममिस्मि हय दव
गा गुन माग प्रह ति क्रम ध्व धन दाडा गुन माग उक्ति विस्त्राय ॥ तिष्ठ
हल ॥ नैदिप न धौ धन न मस्तान न वना श्रा दू स हिलक लिङ्गा य धन
काडा गीत सह माटी ॥ ॥ धन इत हय पनिसु विंता क गव उ न ले विस्त्र
इ इ कन का कन इर्वी की द पं वग य कलम संख ऊ ऊं का उल्ली ष श्री धप
न धृति सहित न ताल सा व काडा पिहाया ॥ धन धर्म नि कने गी य की मी
उल धिलक कृपा या दू गू मं उल गा गु या य विसर्जन या य पं वग य वि
य कलम हि ध क विय प्रिका या धि स्तान मा य ऊऊ मति ॥ ॐ ति कि

नमस्तान
इत हय

गाहनीये ॥ धन नल विस्त्राय वक्र प प्रवज धन उिकन पक वाक
पयक श्रमि हा ला वज कलम किस्ति सुउ वक्र खज नल कलम वीउ
सूय दाहाली ॥ धन लडा हा य ॥ ॥ श्रम गम य ति निर्मातन ॥ ॥ धन
श्रु या य ॥ धन गां बूला दि ति धूनं ति व की उल्ली ष ग य धन श्री धप गत य
वग या न स व रु न धिय ॥ ॥ पुन सं उल धिलक ॥ धन दू गू मं उल या टी
गा गु या य विसर्जन क गव तिन हा थ जा प की धन डा प धन गम न मा य ॥ इत हय
॥ धन रा पु न धि सु रु मृ ॥ ध धिं गू म हा या न मा समी प स हा य ॥ ॥
मि ध्या वा व ॥ गुर ग म ही ॥ ॥ धन पं वां क स स व न प क ॥ ॥ कथ क
न ॥ ॥ धन मी उल इ हा य ॥ पला किक ॥ मा ग स्मं ला हा थ सा रा य न क ॥
धन उ म न्नी वा क ल पं प्र वि म रु गी त ॥ शुभ न न्नी वा य ॥ इत हय ॥ धि

इत हय

उति

वप्रक्षमयाय ॥ पूर्वज्ञानसूतय ॥ धनदधनायाय ॥ वाक् ॥ धनपंवव
 द्वागनिर्मितनयाय ॥ वाक् ॥ द.प.उ.यावाक् ॥ वाक् ॥ वाक् ॥ वाक् ॥
 धनवसुधासुवजनधिसंयवाक् ॥ वाक् ॥ धनवजननृवसुधाधिसं
 तय ॥ वाक् ॥ ॥ धनकोषयानविस्तीतय ॥ वाक् ॥ ॥ एगिष्वाप्तवत्रपुत्रे ॥
 ॥ गानक ॥ ॥ नृपप्रहतिविति ॥ ॥ नृपिसमयादकदानविधि ॥ ॥
 ध्यालिङ्गधूपदाना ॥ ध्यानं ॥ नृपगाननमिति ॥ न्यासयाय ॥ धीनवा
 जने ॥ नृपगानयाय ॥ वाक् ॥ ॥ निब्रशकाल ॥ ॥ महाकाल ॥ ॥ नृपि
 वंशः ॥ ॥ धनमगदुपुष्पानाङ्कन ॥ ॥ धनपुष्पपातनयाय ॥ वाक् ॥
 गानपताकधर्षण ॥ वाक् ॥ उत्सव ॥ वजननृपिष्ठानयाय ॥ ॥ धनम
 उत्सवनि ॥ वाक् ॥ ॥ नृपिष्ठाननृपिष्ठकः ॥ स्नाननृपिष्ठक ॥ ॥ धनदध

नाखकन ॥ ॥ धनमैतलदर्शन ॥ दक्षिणतयक ॥ ॥ ध्यालिङ्गद्वप्रति
 मादर्शन ॥ दक्षिणतय ॥ ॥ धनगुण्यातशासनतयक ॥ धनसुस्तिकव
 सी ॥ वंशनाल ॥ सूर्यनाल ॥ धनसुस्तिकस ॥ निष्पसुत्य ॥ गुर्मंत्तलदन
 क ॥ विसर्जन ॥ नि.म.ता ॥ धनपेवारिष्ठकविषयातयनिपातयादहय ॥
 हाजासंपतयाङ्क ॥ धाधिवड ॥ तगिवाक् ॥ ॥ ककनक ॥ हाधजापक
 तयाङ्क ॥ कलण ॥ दूयकनिविचकी ॥ तयाङ्क ॥ दधनाखकन ॥ ॥ निनाऊ
 न ॥ दधनाख ॥ ॥ धनकहावयक ॥ साहासदयाङ्क ॥ निखासपिय
 गान ॥ हाय ॥ यमंगलमिति ॥ ॥ धनमूकयारिष्ठक ॥ मूकटनपूयक
 ॥ वाक् ॥ ॥ धनवडा ॥ रिष्ठक ॥ वाक् ॥ वाक् ॥ ॥ धीनविय ॥ वाक् ॥ धीनध

नामहिषक

आवापिहिषक

यकं॥ ॥नामहूय॥उं वज्रहृत्वाहिषिं वामीति॥॥ॐति नामाहिषकः॥
पताकाहिषकः॥वाक्॥ ॥धनवजावापिहिषकः॥वाक्॥॥ॐतिव
जाहमय॥धं०धनादि॥ ॥ॐतिहानमूडा॥ मूडासमय॥जिसमय
दान॥ ॥वज्रहं०मूडमधिपकंवाक्॥पताकककाय॥ ॥धयाहि
डा॥मिष्यमानेनाहिंमममूडायावकंनय॥पालिहीतुसमाहिंमतिव
॥॥ॐतिभावापिहिषकविधिः॥ ॥गुननध्यधम॥वाक्॥॥हवर्ग
मवाकानमूडननमूडा॥वाक्॥मूडनाहिषकः॥ ॥धनपात्रहृत्वावीज
धनक॥मूडविषय॥पात्रहृत्वा॥साहाहिक॥रुसकनविषय॥प्रतिबोवति॥
दमना॥ ॥धनममूडप॥वाहाहानतय॥मनव॥वदुर्दिगउर्ध्वमधःसनकपय॥
रिक्तन॥॥मिगन॥ ॥धनवमूडानतियकाडा॥पूजा॥गीतप्रमादित॥उदकिम
हृत्वाहृत्वा॥रुमापनविसर्जन॥निसाककाय॥प्रहासमयवज्र॥आगम

जमादिन
मममम

गुहाहिष

आदि॥ ॥ॐतिदमहिषकविधिः॥ ॥धनगुकाहिषक॥धनधमस
हनाडा॥राजापकंनयाडा॥दमनावकन॥यूमासादति॥उकाहिषकविषय॥
धन॥धनकसिंसावचकयाडा॥ऊहांमुसिडा॥मनामिकीगुलिनकयाडा॥
वज्रानमिष्ययाकृपुसतय॥महामहाहृत्वाधयकं॥॥ॐतिगुकाहिषक
विधिः॥ ॥सहजगीतधृत्वागमहृत्वाकाय॥धनहाऊना॥गोवकासयि
धुमागमनि॥नावाय॥वित्तवात॥वयमसदानवाक्॥धृतिप्रहासमय॥
धयाहिडा॥हृत्वागमहृत्वातय॥गुनमागमहृत्वातय॥॥ॐतिपुनप्रमथ
नि॥वामादहिनगीत॥धूय॥वज्रःसनमनीनसलेपनयाय॥मिशनयाऊडा
लाहातडा॥दवीयावडा॥लाहातडा॥धिधिंतावकंनय॥गुननध्यधम॥
वि॥वज्रहाहाननामिजानेवायमिष्ययामम॥हृत्वाहृत्वाहृत्वाहृत्वा॥ ॥
ममम॥ ॥ॐतिप्रहाहृत्वाहिषकविधिः॥ ॥धनममहृत्वाकाय॥

सहजगीत
कासयि
धनगीत
उपपुन

सुभाक्षि क.

[illegible][illegible]

॥ प्रह्लाद उवाच ॥ अहं कल्पमाकं ॥ यदा
 यदा जगत्कालं दृष्ट्वा तस्मिन् प्रह्लाद उवाच ॥
 अहं कल्पमाकं ॥ यदा यदा जगत्कालं
 दृष्ट्वा तस्मिन् प्रह्लाद उवाच ॥ यदा यदा
 जगत्कालं दृष्ट्वा तस्मिन् प्रह्लाद उवाच ॥
 यदा यदा जगत्कालं दृष्ट्वा तस्मिन् प्रह्लाद
 उवाच ॥ यदा यदा जगत्कालं दृष्ट्वा तस्मिन्
 प्रह्लाद उवाच ॥ यदा यदा जगत्कालं दृष्ट्वा
 तस्मिन् प्रह्लाद उवाच ॥ यदा यदा जगत्कालं
 दृष्ट्वा तस्मिन् प्रह्लाद उवाच ॥ यदा यदा
 जगत्कालं दृष्ट्वा तस्मिन् प्रह्लाद उवाच ॥

श्रीमद्भागवत

2637

ASHKA ARCHIVES

योगिनः

शिवः

धनवीवननः दयकीतयः त्वडा नानगपूहनकीतयः ॥ उडा नानगपूहन
 मडा यावकीतयः ॥ गमधामवकनः ॥ ॐ तिष्ठा कनहविधिः ॥ ॥
 धननिष्ठावनाय नया रूप रत्नः वक्रः नलः पयः विन्धवडा ॥ गमधाम ॥ ॥
 उं मा उं दं उं गी रं पूरु की गिष्ठा ला दत्ता उत्थाम् ॥ ॥ सुप्रतिमिडित
 गी नननृपी कृत्वा ॥ मंडल छद किम्भी कारयत ॥ गमधामवकनः ॥ ॥
 ॐ तिष्ठन होत विधिः ॥ ॥ धननिष्ठद किम्भी कारयत ॥ गमधामवकनः ॥ ॥
 मानवववः श्रद्धां कुरु सत्त्वं धनयाहनपावृष्ट ॥ नी त्वयकी त्वडाल
 लतसपूरु कतसं उधनन कयकी कृत्वा तस्य पुद किम्भी पूर्वज्ञान
 उपातननमस्कारा ॥ हन्वी धायसीतया डा दधनावकनः ॥ ॐ

सुप्रतिमिडित

योगिनः

तिष्ठा कनहविधिः ॥ ॥ अथमम फलं जमेति दधनाव ॥ ॥ सुप्रतिमि
 यतिरुं लयः वजनकाः स्वां कितनः गुरूपूजाः दकिम्भी ॥ ॥ यं वधमनिहिल
 कः लिपिक ॥ गलवक्रः धूमां गमनि ॥ प्रवगुडिः आभीर्वादः ॥ तदनीतनीय
 धनकमलः हार्यकात्रयत ॥ वनसाधनं ॥ मांसा रुतिः निष्ठाप्रतिष्ठा
 महावलिः साम पूरु मंडल कलमरिषकः सुगुणः आभीर्वादः ॥ मी
 उलपूरु मीउल कलमरिषकः ॥ सुगुणः आभीर्वादः मीउलपूरु
 कमापनः मीउल सीहानः कलमधायनः ॥ धा रुतिः मधुला दिवि
 सऊनः कलम उति समर्पणः ॥ मधुलनरु प्रवारु ॥ नागपूजा ॥ न
 उ समर्पण प्रवारु कलमपूजान ॥ प्रणायन कलम मीउलम ॥ ॥

योगिनः

सिंहनाविभनः

स्थापयित्वा पूजयत् ॥ पञ्चमूर्तिरिष्यकः ॥ यद्गमं उच्यते तद्गुहा
दिपनिसेवन ॥ तदने कुमारपूजा ॥ यथा नृजमतः गलवर्क कुर्या
त् ॥ ॥ ॐ नमो भगवते नमो भगवते नमो भगवते ॥ ॥
उन्नमः श्रीवत्सलाय ॥ सिंहनाविभनमाह ॥ मङ्गातर्धपञ्चिमाहि
मखनधपतः धनविभनधनः मूलमं उल्लङ्घनापंतयं दुःसिंहनमं उल्ल
कासीतय ॥ सद्यो रतिकसुगत उयकीतय ॥ कृतकैरुयातीन उयकी
तय ॥ कीर्तिकसुगतः पद्मलीकनसहः विधिध्वधपतधूनडाडा ॥ धी
वभलिरुकेः ज्ञापयामूलमं उल्लसतय ॥ सिंधनरापर्यंतः शतः न
कसु उनीलसु उका दूहाकमातकवः कवसेदसहः विधिध्वदवी

यत्न मूलाविधि

मे उल्लसधपतधूनडाडा ॥ कालास्यामङ्गातर्धः सूर्यार्धः पृथ्वीर्धः
शानः स्वरावपूजा ॥ तत्पूजा ॥ सिद्धिसमयः ॥ गीतसहः उच्यते ॥
सिद्धमूपाः आदिसमयनरुह्यसमाधि ॥ गीतसहः कलमपूजा ॥ कैरु
न्यास ॥ पादपूजा ॥ कालास्या गीतसहः धूपयया ॥ गीतदिदयपूजा ॥
महावलिपनिवातपूजा ॥ दगुवलिगीतसह ॥ स्वांकिगत्यः गुत्पूजा
दक्रिगा दगुलिसमय ॥ ॥ ध्यासिङ्गाः पिहीडायाडाः गिष्पपनिआना
धनयाय ॥ गुत्मं उल्लादिः भधवा मं उल्लककधिरुकः नीतांजनः प
ष्पीकलियावकीता ॥ ॥ गुत्मा उल्लादिः नीतांजनः नीतांजनः प
विभगुत्मावन्नुमिगमध ॥ ॥ उदक्रि ॥ तत्तद्वातात्तत्तत्तयाय ॥

मङ्गातर्धः
ललादि

धननिनिहाय ॥ वाक ॥ ॥ मूलमंडलसुखी देवीमंडलसंस्तानकु यः पं.
 पूसा सुति ॥ ॥ ध्याविडाग्राय प्रवक्ष्यामि ॥ साकांक्षसादविह
 लादिति ॥ ॥ सिंधुमाहनिहाधन समस्तं देवतादिगुणपूजा प्रहतिन
 निवक धनडाडा विधिधर्ममूलपूजा गडमहाजन नंदिनमहा
 जनवता आदिवहिसकलिहोयधनडाडा ॥ ॥ ध्याविडाग्राय
 ध्यासं गुणमाता देवदेवी विहाडा मृगमासया य विधिधर्मध
 नधनगीतसहयादिधनडाडा प्रदक्षिण दिगपतिग्राहगयाय की
 पं वगमनिन गीत गीतहाडाह नहा ॥ ॥ ध्यासविहोवकी तात्थ ॥
 धनैति उपाध्यायिहीडायाडा निष्पयाहडा नैगमकुप्यन ॥ ॥

ध्याविडाग्राय उपाध्याय

उपाध्यासं वडा सुवहिविय ॥ श्रीधनिनागकुत्वाककाय ॥ धनै
 तिगुणमाता पिहीविहोवक ॥ ॥ धनैति हनमिनवापुनृपया
 य ॥ धनैतिहाता ॥ उं नमशीवकुसुवाय ॥ यासासंस्तानवकुति ॥
 धनैतिमूर्ध ॥ ॥ धनगमकुकाकाय ॥ हनमिनवावकुतिहव
 नववानृपयाय ॥ पूजायाय ॥ ॥ धनपं वमंडलसुखीतय मधुस
 निग निष्पयाहडा वक ॥ सुवर्हदहानतिका वीरुधनक पागु
 मिनसतय पं वमंडलसुखीतय मधुस
 देवदेवीमंडलसुखीतय मधुस
 धनवकुवधयाय ॥ ॥ वडाध्यायिहीडायाडा निष्पयाहडा नैगमकुप्यन ॥ ॥

धनमिनवापुनृपया

धनमिनवावकुतिहव

धनमिनवावकुतिहव

अमरिका

महादेवक

मंडलसहितं॥ तदनुक्रमनिकासं गतप्रविष्टं महानतसुश्रुतिप०
तुप्रदक्षिणिकुगांजसिमाशसं लासानगीतसहस्रनात्रुमथव
वकीकीउल॥ मुख्यं तस्य पूर्वज्ञानं पंचपुष्पमंकायधत॥ ॥ नि
यतितवाकंडु॥ ॥ धर्मेतिधूमदान॥ श्रावणविधि॥ धनस्यानेकाया
वाक्य॥ सिंहनमैउलसंस्वानुया॥ जीकाननउपुध॥ ॥ कृतिमात
रिषकविधिः॥ ॥ धनवक्रुत्थातन॥ ॥ धनमैउलयातलकन॥
॥ यामित्वाखसमाहितीति॥ ॥ धर्मेतिस्वस्तिकसुख्य॥ गुत्रमैउलद
नक॥ वाकपालपथीविहर्जनतीम॥ गा॥ ठिकायोविधान॥ ॥ धर्मेति
हथआपकीनयाडा॥ धाधिवडति॥ ॥ धनकीर्तिकलम॥ कूव

मंडलान

कृतिविषयक॥ मीगलग्नधन॥ ॥ धनगुत्रप्रहतिन॥ सामकि काय
खीकन्य॥ ॥ धनकृष्कनसंस्वानुयायक॥ महादानवाक्ययादि
वगुनल॥ ॥ धनउद्याताकन्य॥ ॥ धनमंडुपुदान॥ ज्ञापकाया॥ ॥
ज्ञापयावक॥ ज्ञापस्यानकूवक॥ ॥ धातनकयक॥ ॥ सिंहमाहति
गीतउदितातल॥ ॥ गुत्रमागोहिहासनसविक्रावक॥ ॥ धनवाक्य
कृष्कमधिकाय॥ गुत्रमागसक॥ गुत्रमागसहस्रजनमावक॥ ॥ उ
पाध्याप्रहतिनसकल्यंसमयवक्रविधिध्रीकालयिगीत॥ धर्मीग
निष्ठाया॥ ॥ धनगुत्रमागामूजायाय॥ गीतवाक्यवक्रि॥ दक्षिण
सकलधर्मनिपतिहने॥ गुत्रमागवाक्यभूदिनगागयावक॥
धनवकीकीउलगीतन॥ मडाकाकाया॥ ॥ धनधर्मनिसलग्नवि

मंत्रविषय

उदिताकल

कालवि

वक्रि

वक्रि

नामः

[illegible]

धूम्रगन्धि

वाग्दत्त। श्रमिताहवत्तुति॥ ॥ श्रमाद्यसिद्धस्य॥ पत्रमाश्ववत्तु। स
ममव० पानमिता०। कर्म०। श्रुति०। श्रुतील०। मय०००। श्रुती०। श्रमाद्य
॥ ॥ वत्तुहत्तुस्तीनामानि॥ वत्तुवत्तुवत्तुवित्तासिती॥ वत्तुमदा॥ व
त्तुकीकना॥ वत्तुनता॥ वत्तुपटाका॥ वत्तुमासा॥ वत्तुदया॥ ॥ श्रुती
एम्पु॥ ॥ वत्तुनेनात्मा॥ वत्तुहत्ता॥ वत्तावली॥ वत्तुकला॥ वत्तुमास
कि॥ वत्तुनति॥ ॥ वेनावत्तुम्पु॥ वत्तुजकिनी॥ वत्तुगेनी॥ वत्तुजकिनी
॥ वत्तुतास्या॥ वत्तुनवती॥ माह्वति॥ ॥ नत्तुसिहवम्पु॥ वत्तुगना॥
वत्तुहना॥ वत्तुम्पु॥ वत्तुकासा॥ वत्तुमाना॥ मातवत्ता॥ वत्तुका
मा॥ श्रुतीवत्ता॥ श्रुतीनति॥ ॥ श्रुमिताहवम्पु॥ वत्तुन

गम। नाग वडा। वडगीता॥ वडमहासूची॥ वडवताली॥ वडमणि॥ वड
 हास्या॥ वडतना॥ वागनता॥ ॥ भूमा घसि इत्यमु॥ वडगर्हा॥ व
 डमाया॥ वडवडदवा॥ वडनृमृग्यत्री॥ समय वड॥ वडनति॥ ॥ वूक्ति
 थगतकुलसीहासमाका॥ ॥ गुरु॥ ॥ अक्षरालाहयनननयातयकहः भूः
 ॥ ॥ ॥ भावम॥ ॥ कुं हः भूः ॥ ॥ निति वि सनयतु ॥ ॥
 वक्षबंधकोकाया॥ वक्क॥ अज्ञानतिमिरांधस्यतानां जनशलाकया॥ वक्षरुमीति
 नयेनतस्मै श्रीगुरवे नमः॥ १ ॥

पुतिनाटिया.



